

## कविता नहीं आग की ओर इशारा

चित्रकार सैयद हैदर रजा की नोट बुक में अनेक हिन्दी कवियों की कविताओं की पंक्तियाँ अंकित होती रहती हैं। नोट बुक ही ब्या, उनकी चित्र कृतियों पर कुछ शब्द और काव्य पंक्तियाँ उनके कलाकर्म का हिस्सा बन गई हैं। उनकी एक चित्रकृति पर 'सूर्य नमस्कार' शब्द अंकित है। वैसे, चित्रकार के रूप में रजा सूर्य के आराधक की तरह ही लगते हैं। उनके चित्र देखते हुए केदारनाथ सिंह की ये पंक्तियाँ याद आती हैं। 'आप विश्वास करें, मैं कविता नहीं कर रहा, सिर्फ आग की ओर इशारा कर रहा हूँ।' रजा के चित्र आग की ओर इशारों जैसे ही हैं।

जब रजा के चित्रों को देखकर कविगण कविता करते हैं तो अशोक वाजपेयी को रजा के रंग शब्द की तरह अपने विन्यास के लिए विकल होते दिखाई देते हैं। रजा की कृति पर उनकी कविता अंकित है- 'आओ, जैसे अंधेरा आता है अंधेरे के पास जैसे जल मिलता है, जल से जैसे रोशनी धुलती है रोशनी से।' कवि को लगता है कि 'रंगों में प्रार्थना बसी है।' यह हमारी सीमा है कि हम शब्दों के बिना देख

नहीं पाते। चित्र पर ध्यान लगाते ही शब्द सुनाई पड़ने लगते हैं। रजा को तुलसीदास की कविता भी खूब भाती है। उनकी डायरी में तुलसी बाबा की चौपाईयाँ भी मिल जायेंगी। तुलसी ही तो कहते हैं कि नाम ही आगे चलता है और नामी उसके पीछे चलता है। हमारा जीवन भाषा के घेरे में है जहाँ शब्दों के

विवारांग-रंग समझ नहीं आता। उनकी डायरी में अंकित है- 'स्वाद, सुगंध, पीड़ा आनंद समझाए नहीं जा सकते। इनका तो अनुभव चाहिए। प्रेम माँ के हृदय में संचित है, आँखों में, हर क्रिया में, शब्दों की सीमा के बाहर।' रजा के चित्रों पर जब कुछ कविताएँ लिखीं तो मुझे उनमें अलौकिक माँ नजर आई, जो स्वयं अपने ही आह्लाद की गोद में बैठी है। कभी मुझे ये चित्र रंगों की अक्षत से भरी पूजा की थाली जैसे लगे। सूर्य और अंकुरण के अन्तर्सम्बन्ध को रजा ने अपने चित्रों में ऐसे दर्शाया है जैसे वैदिक गायत्री और सावित्री के अन्तरंग संवाद। उनके चित्र प्रकाश से प्रार्थना की तरह लगते हैं।



रजा और अशोक वाजपेयी

■ ध्रुव शुक्ल

### पूजा की थाली

कुमकुम  
पुष्पों की पंखुरियों से भरी  
पूजा की थाली जैसे है ये चित्र

रंगों के उदगम पर खड़े  
प्रार्थना मगन

बेहद के मैदान में  
बिखर रही है  
उनके हाथों से छिटकी  
रंगों की अक्षत

### अलौकिक माँ

नील नीरव पर अंकित लाल बिंदी  
पेहरा जैसे माँ का

पीले रंग पर खिंची माहुर की रेखा  
जैसे माँ के पांव

हवाओं में लहराती रंगों की छाप  
जैसे घूमती माँ की

किलकारी पर अंकित काला डिटौना  
जैसे कोई शिशु नवजात

उनके चित्रों में दिखती  
व्याकुल, पुरातन माँ  
शिशु के साथ

चित्रकार रजा के कलाकर्म पर  
ध्रुव शुक्ल की कविताएँ



रजा की कृति और अशोक वाजपेयी की कविता।